IJAER/September-October 2022/Volume-11/Issue-5 ISSN: 2278-9677
International Journal of Arts & Education Research

मनोरोग एवम समाज

अजय साहू

रुंगटा कॉलेज ऑफ़ साइंस एंड टेक्नोलॉजी

शोध सार

'मनोरोग* मनोविज्ञान विषय के व्यापक क्षेत्रों में से एक बहुत ही प्रासंगिक विषय है जो आज हम सभी की दिनचर्या से उत्पन्न होकर सामान्य जीवन को प्रभावित करता है और जो व्यक्ति के व्यवहार में अचानक या धीरे–धीरे उपजी असामान्यता की ओर इशारा करता है। आज पूरे विश्व में इस विषय की प्रासंगिकता है। 'मनोरोग' और 'मनोविज्ञान' सार्वभौमिक हैं। अर्थात् इनका अस्तित्व पृथ्वी पर मानव जाति की उत्पत्ति से शुरू होकर प्रत्येक जगह और काल में रहा है। पाषाणकालीन खोपड़ियों में छिद्रों के प्रमाण पाये गयें जिनका गहन विश्लेषण मनोवैज्ञानिकों द्वारा किया गया है। इस शोध पत्र में हम मानव विज्ञान और समाज के बीच के संबंध पर चर्चा करेंगे 1

प्रस्तावना

प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक शाहिद हसन ने सेलिंग (1943) के कथन का हवाला देते हुए बताया कि पेरू में बहुत सी ऐसी प्राचीन खोपड़ियाँ मिली हैं जिनमें छोटे छिद्र थें। खोपड़ियों में छिद्रों के प्रमाण से यह स्पष्ट हो गया कि ये शल्य क्रिया चिकित्सा के उद्देश्य से की गई थी। जिन्हें ट्रीफनिंग कहा गया।' मानसिक रोगों के सन्दर्भ में जीववाद से प्रेरित विचार सर्वमान्य थें जिसमें ट्रीफनिंग, निसारन आदि प्रयोग में लाये जाते थें। शल्यक्रिया के लिए नुकीले पत्थर से खोपड़ी में छेद कर दिया जाता था। ऐसी मान्यता थी कि 'मन' की असामान्यता, भूत–प्रेत या बुरी शक्तियों के मनुष्यों में प्रवेश कर जाने की वजह है। इसलिए इन बुरी शक्तियों को कपाल में छिद्र करके बाहर निकलने का रास्ता बनाया जाता था। 'मन' को समझने का सफर हिप्पोक्रेट्स, प्लेटो, विल्हेम बुंट आदि के विचारों से शुरू होकर सिग्मंड फ्रॉयड के मनोविश्लेषण तक पहुँचा और आज भी जारी है। दिन–प्रतिदिन भारत सहित विश्व के तमाम देशों में जनसामान्य के बीच बढ़ती निराशा, चिंता, तनाव, अवसाद, नशे की प्रवृत्ति, आत्महत्या, अपराध घटनाओं की खबरें इलेक्ट्रानिक, प्रिंट एवं सोशल मीडिया की प्रमुख सुर्खियाँ बनी रहती हैं। पिछले कुछ वर्षों और वर्तमान वर्ष के घटनाक्रमों पर नजर डालें तो अवसाद व अन्य मानसिक विकृतियों से उपजे भयावह परिणामों की एक लम्बी फेहरिश्त नज़र आती है। राजस्थान में एक ही परिवार के 8 लोगों द्वारा भगवान के दर्शन की लालसा में जहरीले लड्डू खाकर सामूहिक आत्महत्या, नोयडा में गहरे अवसाद की शिकार दो सगी बहनों का खुद को सालों तक घर में कैद कर लेना एवं उनमें से एक की मौत हो जाने पर बदबू का एहसास होने पर पड़ोसियों द्वारा बाहर निकाला जाना, कानपुर पूर्वी के आई0पी0एस0 अधिकारी सुरेन्द्र दास का पारिवारिक कलह में अवसादग्रस्त होने पर सल्फास पी कर आत्महत्या, दिल्ली के बुराड़ी में एक ही परिवार के ग्यारह लोगों द्वारा की गई सामूहिक आत्महत्या व मध्य प्रदेश सरकार में मंत्री एवं आध्यात्मिक प्रवचन वक्ता भय्यू जी महराज का पारिवारिक कलह से उपजे अवसाद" के चलते गोली मारकर जीवन समाप्त कर लेना। दुनिया को हिलाकर रख देने वाली अपने देश में घटी ये ऐसी घटनाएं हैं जिनके तह तक जाने पर विभिन्न तनावपूर्ण परिस्थितियाँ, अंधविश्वास व सामाजिक, पारिवारिक, जीवन की जटिलताओं में जकड़ी विकृत हो चली मनोदशाएं प्रदर्शित होती हैं, जिसके दिल दहला देने वाले गम्भीर परिणाम दुनिया के सामने विस्फोटकों की शक्ल में देखने को मिलते हैं। आश्चर्य से आँखें तब फटी रह जाती हैं जब, दुनिया को शांति, मानवता, सद्भावना और आध्यात्मिकता के प्रवचनों से खुशहाल जीवन का मंत्र बताने वाले भय्यू जी महराज जैसे विद्वान स्वयं मौत को गले लगा लेते हैं। मनोवेद, माइण्ड हास्पिटल, पटना के वरिष्ठ मनोचिकित्सक डा0 विनय कुमार लिखते हैं "दरअसल दुःख की दुनिया में कोई खास नहीं। सभी आम हैं। मनोरोग किसी को भी हो सकते हैं। आपको, मुझे और उनको भी जो पवित्र आसन पर बैठकर शरीर,

मन और ईश्वर के बारे में प्रवचन देते रहते हैं।"* असाधारण उपलब्;धियों वाले लोगों की मनोविकृतियों का जिक्र करते हुए डा0 विनय कुमार ने बताया है कि चालीस प्रतिशत अमेरिकी राष्ट्रपतियों में डिप्रेशन पाया गया। द्वितीय विश्वयुद्ध का महानायक चर्चिल, बाईपोलर मूड डिस्ऑर्डर का शिकार था। अपने देश में महाकवि निराला सहित कई बड़े लेखक मनोरोगों की चपेट में पाये गयें।"मनोरोग' सम्बन्धी विषय पर भारत के हालात बेहद चिंताजनक हैं। जहाँ गणेश जी, शिव जी आदि की मूर्तियों को दूध पिलाने का दावा किया जाता है। मनोकामनाओं की सिद्धि हेतु स्वयं की जीभ काटकर भगवान को चढ़ा दी जाती है, परिजनों या पड़ोसियों के बच्चों की बलि तक दे दी जाती है। मन व शरीर की विकृतियों के निवारण और समाधान हेतु तंत्र-मंत्र, झाड-फूँक, टोने-टोटकों को शत्-प्रतिशत महत्व दिया जाता है और छोटी से लेकर बड़ी हर समस्या के समाधान हेतु तांत्रिकों, ओझाओं आदि की शरण में जाया जाता है। जहाँ आशाराम बापू, बाबा राम रहीम जैसे अपराध की दुनिया के खतरनाक अपराधी जो धर्म के सिद्धान्तों का दुरूपयोग करते हुए भोग-विलास में संलिप्त रहें और भोली जनता को बेवकूफ बनाते रहें उन्हें, सजा सुनाए जाने पर विरोध स्वरूप बहुत बड़ी तादाद में जनमानस सड़कों पर उतर आता है। ऐसे अंधविश्वास के आकाश छूते भावनाओं वाले देश में मनोरोगों की कितनी जानकारी और जागरूकता आमजन को होगी इसकी स्वतः ही सहजता से कल्पना की जा सकती है। यह चिंताजनक है कि भारत में मनोविकृतियों के सम्बन्ध में आमजन की धारणा आज भी आदिम, पुरापाषाण काल की अवैज्ञानिक, अतार्किक धारणाओं से मेल खाती है। भारत मानसिक स्वास्थ्य को किस तरह देखता है? शीर्षक से "द लिव लाफ फाउण्डेशन' द्वारा जारी रिपोर्ट में बताया गया है कि भारत में 47 प्रतिशत लोग मनोरोग को सामाजिक कलंक मानते हैं। रिपोर्ट में बताया गया है कि 26 प्रतिशत लोग मनोरोगियों से डरे रहते हैं, उनसे दूरी बनाकर रहते हैं तथा बातचीत व सम्पर्क नहीं करते हैं।प्राथमिक स्रोतों के रूप में 8 भारतीय शहरों के 3556 लोगों पर किये गये शोध व 2018 को जारी इस रिपोर्ट में पता चला कि 1/4 लोग ही मदद देना चाहते है बाकी कुछ भी धारणा बना लेते हैं। फाउण्डेशन की संस्थापक दीपिका पादुकोण हैं। भारत, जहाँ "मनोरोगी' शब्द सुनते ही आमजन की कल्पना में पागल व्यक्ति की छवि तैर जाती है। अमूमन लोग "कामन मेंटल डिसुआर्डर' वाले मनोरोगियों को भी पागलों की श्रेणी में शामिल करते हैं और उनकी हँसी उडाते हैं। इस सन्दर्भ में किंग जार्ज चिकित्सा वि0वि0 के 'मानसिक चिकित्सा विभाग" के हेड ऑफ डिपार्टमेंट" प्रो0 दलाल ने "गाँव कनेक्शन' इलेक्ट्रॉनिक मीडिया को दिये एक साक्षात्कार में बताया कि मानसिक बीमारी को पागलपन न समझें। डा0 दलाल ने बताया कि मनोरोगों में पागलपन के रोगी बहुत कम संख्या में होते हैं जबकि पागलपन की तुलना में कामन मेंटल डिस्आर्डर जैसे अवसाद" के रोगियों की संख्या बहुत ज्यादा है। मनोरोगियों पर हँसने वालों की हँसी को 'तेजाबी हँसी' बताते हुए डा0 विनय कुमार कहते हैं "क्या आप जानते हैं कि आपकी हँसी का तेजाब समाज के 40 फीसदी से भी ज्यादा सदस्यों के घावों को भरने नहीं देता।" "विश्व स्वास्थ्य संगठन' - 2008 की रिपोर्ट के मुताबिक शारीरिक और मानसिक बीमारियों में 'अवसाद' को विश्व की चौथी बड़ी बीमारी ताया गया है और अनुमान लगाया गया है कि 2020 तक यह दुनिया की दूसरी बड़ी बीमारी होगी।* रिपोर्ट के अनुसार बीमारियों में पहले नम्बर पर डिप्रेशन (अवसाद), दूसरे नम्बर पर एंजायटी, तथा तीसरे नम्बर पर नशीले पदार्थों का सेवन है। रिपोर्ट से पता चलता है कि चीन और भारत में डिप्रेशन के रोगी पूरे विश्व में सबसे ज्यादा हैं। दुनिया भर में डिप्रेशन से प्रभावित लोगों की संख्या करीब 32.2 करोड़ है जिसका 50 प्रतिशत सिर्फ इन्हीं देशों में हैं। ५७/.प्र.0. के डेटा से पता चलता है कि दुनिया भर में डिप्रेशन के मरीजों की संख्या 2005 से 2045 के बीच 48 फीसद बढ़ी है।" वर्ष 2045 में 7.88 लाख लोगों ने आत्महत्या की।'

समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण

शोध हेतु चयनित एवं प्रस्तावित विषय "मनोरोग एवं समाज' मनोरोगियों से जुड़े समग्र पड़ताल की दिशा है। सामान्य मनोविज्ञान के क्षेत्र में मनोरोग विषय का जैविक, भौतिक रासायनिक आदि दृष्टिकोण से अध्ययन होता आ रहा है और नवीन अनुसंधानों का क्रम आज भी जारी है। शोध विषय समाज मनोविज्ञान से सम्बन्धित है। सामान्य मनोविज्ञान व्यक्ति की क्रियाओं एवं व्यवहार का अध्ययन करता है। मनोविज्ञान केमूलभूत सिद्धान्त, सामान्य मनोविज्ञान में ही निहित होते हैं। वहीं समाज मनोविज्ञान समाज में व्यक्ति की सामाजिक अन्तःक्रियाओं, सामाजिक परिस्थितियों या उद्दीपनों के सन्दर्भ में व्यक्ति के व्यवहार का अध्ययन करता है। सामान्य मनोविज्ञान व्यक्ति केसामाजिक पक्ष पर ध्यान नहीं देता हैं, जबकि समाज मनोविज्ञान के अन्तर्गत व्यक्ति की असामान्य मनोदशाओं या व्यवहार का अध्ययन सामाजिक परिप्रेक्ष्य में किया जाता है। व्यक्ति के व्यवहार का अध्ययन समाज से पृथक् करके सम्भव नहीं है क्योंकि व्यवहार शून्य में नहीं वरन् अन्य व्यक्तियों या सामाजिक परिस्थितियों के सन्दर्भ में घटित होता है। ऐसे व्यवहार जो उद्दीपकों

से उत्पन्न होते हैं उनका अध्ययन समाज मनोविज्ञान में किया जाता है। शोध विषय के उपशीर्षक–"भारतीय सामाजिक परिप्रेक्ष्य के अन्तर्गत लखनऊ एवं बहराइच जिलों के मानसिक रोगियों का समाजशास्त्रीय अध्ययन" से तात्पर्य ऐसे सम्पूर्ण अध्ययन से है जो समाजशास्त्र विषय के अन्तर्गत दृष्टिगत होते हैं। जैसा किसमाजशास्त्र के पिता अगस्त काम्टे" ने कहा है कि "समाजशात्र विज्ञानों की रानी है।" अर्थात् 'समाज' में भौगोलिक, पर्यावरणीय, जैविक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, मनोवैज्ञानिक, आर्थिक, यांत्रिक, अपराधशास्त्र, भौतिक आदि विषयों की विशालता समाहित है और "समाजशास्त्र' विषय, समाजरूपी गर्भ में समाहित इन सभी पक्षों का अध्ययन करता है। अत: शोध विषय के समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से अध्ययन का तात्पर्य, विविधताओं एवं विभिन्न संस्कृतियों की अनेकता वाले देश भारत में मनोरोगियों से सम्बन्धित सभी सामाजिक पहलुओं का अध्ययन है। समाजशास्त्र और समाज मनोविज्ञान के सम्बन्धों को पुख्ता बताते हुए पियर्सन ने कहा है* कि "वस्तुत: दोनों में कोई अन्तर नहीं है।" मानवव्यवहार के सामाजिक पक्ष को समझने में जातियों की उत्पत्ति एवं विकास, संरचना, समूह संगठन और संस्कृति का ज्ञान आवश्यक है। चूँकि समाज का निर्माण व्यक्तियों द्वारा ही होता है अतः समाज की इकाई व्यक्ति है। इसी प्रकार शोध विषय की इकाई भी व्यक्ति है। जिसके ईर्द-गिर्द सामूहिक, वैयक्तिक या समूह वैयक्तिक अन्तःक्रियाएं सामाजिक परिप्रेक्ष्य में घटित होती हैं और एक-दूसरे को प्रभावित करती हैं।

जैविक दृष्टिकोण

'प्रकार्यय शब्द मस्तिष्क की समग्र संरचनात्मक एवं कार्यात्मक प्रणाली को अभिव्यक्त करता ।मनुष्य का मस्तिष्क उसके तंत्रिका तंत्र का हिस्सा है। तंत्रिका तंत्र में तंत्रिका कोशिकाएं, मस्तिष्क और मेरू रज्जू शामिल होते हैं। शरीर में रीढ़ से मस्तिष्क का संयोजन केंद्रीय तंत्रिका तंत्र का निर्माण करता है। जैसा कि ज्ञात है, मानव मस्तिष्क एक बहुत ही जटिल संरचना होती है। जिसमें अरबों-खरबों न्यूरॉन्स (तंत्रिका कोशिकाओं) के संजाल होते हैं। मनुष्य के वाहय भौतिक वातावरण कीसूचनाएं इंद्रियों द्वारा इन न्यूरॉन््स तक पहुँचायी जाती हैं। न्यूरॉन्स पलों में इन सूचनाओं को पहचानकर वापस व्यक्ति को प्रतिक्रिया करने की सूचना देते हैं और व्यक्ति क्रिया या घटना के प्रति प्रतिक्रिया व्यक्त करता है। इसे एक सरल उदाहरण से समझ सकते हैं। जैसे, व्यक्ति का हाथ अचानक गर्म तवे या गर्म प्रेस पर पड़ जाए तो वह तुरंत सेकेंड या पल में हाथ झट से हटा लेता है। होता यह है कि तेज आँच की यह सूचना हाथ के नसों से होते हुए मस्तिष्क के न्यूरॉन्स में पहुंचती है और सेकेंड के न्यूनतम हिस्से में मस्तिष्क यह सूचित या घोषित कर देता है कि यह तेज आँच उसकी शरीर क्षमता के प्रतिकूल है और बर्दाशत करने योग्य नहीं है। अत: संक्षेप में हम यह समझ सकते हैं कि मनुष्य का 'मन' या व्यवहार एक ऐसा प्रकार्य है जो मानव मस्तिष्क की जटिल संरचनात्मक एवं कार्यात्मक प्रणाली पर आधारित है। मस्तिष्क में भूख, प्यास, स्वाद, गंध, स्पर्श, श्रवण, वासना, क्रोध, भावना, तृष्णा, प्रेम, घृणा, खुशी, दुःख, बुद्धि, चतुराई, ऐच्छिक गतिविधियों आदि के केंद्र स्थापित होते हैं, जिनके नियंत्रण में शरीर इन संदर्भों में प्रकार्य करता है। यह बहुत दिलचस्प है कि मस्तिष्क के ये न्यूरॉन््स काफी हद तक ब्रह्माण्ड की संरचना जैसे दिखाई देते हैं। इसके खरबों न्यूरॉन्स ब्रह्माण्ड में मौजूद, खरबों, तारों,ग्रहों-नक्षत्रों, आकाशगंगाओं व मंदाकिनियों की संख्या से कहीं न कहीं समानता प्रकट करते नजर आते हैं। जब मस्तिष्क में न्यूरॉन्स सूचनाएं लाते, ले जाते हैं तो तारों जैसी चमक से टिमटिमाते हैं।" मस्तिष्क में ज्ञानेन्द्रियों के द्वारा लायी गयी सूचनाओं और उनके अनुरूप व्यवहार प्रदर्शित करने में एक सुंदर लयबद्धता दिखाई पड़ती है। सुंदरतम् लयबद्धता का स्वरूप हमें ब्रह्माण्ड में भी दिखाई देता है जहाँ ग्रहों द्वारा नक्षत्रों की एक निश्चित सीमा रेखा में गति एवं परिक्रमा होती रहती है। इस प्रकार तंत्रिका कोशा अर्थात् न्यूरॉन्स, सूचना संवहन की इकाई होती है।" न्यूरोकेमिकल्स की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। कोशाओं का संगठन अणुओं के संयोजन से होता है जो परमाणुओं के संगठन से बनते हैं। अर्थात् कोशाओं की सूक्ष्म इकाई परमाणु होते हैं। जैसा कि सभी सजीव या निर्जीव पदार्थों की सूक्ष्म इकाई परमाणु होते हैं। अंत:स्रावी ग्रंथियों को नियंत्रित करने वाली मास्टर ग्लैण्ड जिसे पिट्यूट्री ग्रंथि कहा जाता है यह अग्रमस्तिष्क के हाइपोथैलेमस वाले भाग में स्थित होती है। सायको न्यूमेरोइम्यूनो सिस्टम के अन्तर्गत मानसिक स्थितियाँ, मस्तिष्क, अंतःस्रावी तंत्र एवं प्रतिरक्षा तंत्र सामूहिक रूप से कार्य करते हैं। तंत्रिका तंत्र में एक संरचना है जो एक न्यूरॉन (तंत्रिका कोशिका) को किसी अन्य न्यूरॉन या लक्षित प्रभाव सेल में विद्युत या रासायनिक सिग्नल पास करने की अनुमति देती है। यह शब्द शेरिगंटन द्वारा दिया गया। सैंटियागों रामन वाई काजल (। मई 1852 से 17 अक्टूबर 1931) स्पेनिश न्यूरो सांइटिस्ट और रोगविज्ञानी ने प्रस्तावित किया कि न्यूरॉन्स पूरे शरीर में नहीं हैं फिर भी एक दूसरे के साथ संवाद करते हैं। उनका यह सिद्धांत नन््यूरॉन्स सिद्धांत के रूप में मशहूर हुआ। मस्तिष्क में टेम्पोरल लोब, अमिग्डाला एवं हाइपोथैलेमस मस्तिष्क के वे हिस्से हैं जो स्नायविक और कार्यात्मक अन्तर्सम्बन्धों के द्वारा धार्मिकता और भावुकता को अभिव्यक्त करते हैं।

मनोरोगों का वर्गीकरण

अमेरिका के साइक्याट्री एसोसियेशन द्वारा जारी पुस्तक DSM के ICD–9 में मनोरोगों को मोटे तौर पर दो भागों में बाँटा गया है –

- साइकोसिस PSYCHOS = मन, SES –विकार
  मन में उत्पन्न विकारों को साइकोसिस या मनोविकृति कहते हैं। यह रोग आनुवंशिक होते हैं एवं नशीली दवाओं के लगातर प्रयोग से भी हो सकते हैं। इसे मनोविक्षिप्ति भी कहते हैं। नींद की कमी एवं पर्यावरणीय कारकों से भी यह रोग हो सकते हैं। कैटाटोनिया, द्विध्रुवी विकार, एक प्रकार का पागलपन, मतिभ्रम आदि रोग इसमें शामिल हैं। साइकोसिस के संदर्भ में मोहम्मद सुलैमान एवं दिनेश कुमार लिखते हैं कि मनःस्नायुविकृति की तरह मनोविकृति भी मानसिक रोग है लेकिन उसकी अपेक्षा यह बहुत ही तीव्र तथा संगीन होता है। रोगी का व्यवहार विचित्र तथा निरर्थक मालूम पड़ता है। वह सुखद परिस्थिति में रोता है और दुःखद परिस्थिति में जोर–जोर से हँसता है। स्किजोफ्रेनिया पुरुष व महिलाओं में समान रूप से होता है। जैसा कि डॉ0 विनय कुमार ने बताया है कि साइकोसिस–समूह के रोगों का एक लक्षण है – ल्युशिनेशन। इसमें होता यह है कि कोई स्रोत या कारण नहीं हो तब भी इंद्रियाँ उन्हें अनुभव करती हैं। आभासी आवाजें सुनाई देती हैं और आभासी आवाजों के साथ अक्सर मरीज बातचीत करने लग जाते हैं।” उन्माद, स्किजोफ्रेनिया आदि रोग साइकोसिस के अन्तर्गत आते हैं। 40 प्रतिशत लोगों में ये रोग होते हैं।

2. न्यूरोसिस NEURO = तंत्रिका, OSIS = कोढ़ या असामान्य स्थिति
एक ग्रीक शब्द है। इसे साइकोन्यूरोसिस या तंत्रिका विकार भी कहते हैं। इसमें भ्रमासक्ति (9०ष्््ंगा5) या विश्रांति (परभापला।॥०ण5) का अभाव होता है। न्यूरोसिस शब्द 1769 में स्कॉटिस चिकित्सक विलियम कलन द्वारा गढ़ा गया था।” न्यूरोसिस के संदर्भ में नोविश्लेषक करेन हर्नी ने महत्वपूर्ण सिद्धान्त प्रस्तुत किये हैं। जब बच्चे का प्रारम्भिक जीवन कुचल दिया जाता है तब उसका आत्म विकास बाधित हो जाता है।” न्यूरोसिस के अन्तर्गत जुनूनी, ध्यकारी, व्यक्तित्व विकार, आवेग नियंत्रण विकार, चिंताविकार, हिस्टीरिया, चिंता, उदासी या अवसाद आदि संज्ञानात्मक समस्याओं वाले रोग शामिल हैं।” मनोरोगों के संदर्भ में निमहैंस बैंगलुरू के वरिष्ठ मनोचिकित्सक डॉ0 निमेष देसाई का कहना है कि साइकोसिस की संख्या में तेजी से वृद्धि नहीं हो रही है अतः ये न्यूरोसिस की तुलना में 40 प्रतिशत होते हैं। जबकि न्यूरोसिस के रोगी साइकोसिस की तुलना में 90 प्रतिशत होते है। न्यूरोसिस को कामन मेंटल डिस्थ,आर्डर बताते हुए डा0 देसाई कहते है कि न्यूरोसिस टाइप के रोग सोशियो पालीटिकल, इकोनामिकल एवं कल्चरल आदि प्रभावों से उत्पन्न होते हैं। डा0 सुलैमान एवं दिनेश कुमार ने असामान्य मनोविज्ञान की विषय वस्तु का क्षेत्र प्रस्तुत किया है।

- साइकोन्यूरोसिस (मनःस्नायुविकृतियाँ)
- साइकोसिस (मनोविकृतियाँ)
- मेण्टल डिफीसिएन्सी (मानसिक दुर्बलता)
- सेक्सुअल डिस्जऑर्डर्स (लैंगिक विकृतियाँ)
- मनोविकारी व्यक्तित्व या साइकोपैथिक पर्सनालिटी
- क्राइम या अपराध

प्रस्तुत शोध विषय चूँकि मानव मन और उसकी विकृति के संदर्भ में है अतः यहाँ स्पष्ट रूप से यह समझ लेना भी आवश्यक है कि मन को मापने या उसे परिभाषित करने का क्या पैमाना या व्याख्या है? 'मन' का तात्पर्य परिकल्पित मानसिक प्रक्रियाओं एवं क्रियाओं की सम्पूर्णता से है जो, मनोवैज्ञानिक प्रदत्त व्याख्यात्मक साधनों के रूप में कार्य करती हो सकती है।” मन, मस्तिष्क की उस क्षमता को कहते हैं जो मनुष्य के चिंतन शक्ति, स्मरण शक्ति, निर्णय शक्ति, बुद्धि भाव के रूप में निहित है। सामान्य भाषा में मन शरीर का वह हिस्सा या प्रक्रिया है, जो किसी ज्ञातव्य को ग्रहण करने, सोचने और समझने का कार्य करता है। यह मस्तिष्क का एक प्रकार्य है। सिग्मण्ड फ्रॉयड ने अपने मनोविश्लेषण सिद्धान्त में मन को संरचनात्मक एवं कार्यात्मक आधारों पर वर्गीकृत किया है। डॉ हिरियनना के अनुसार भारतीय मनोविज्ञान वास्तव में आत्मविज्ञान है।” अतः मनोविकृतियों के सन्दर्भ में हमें मन के स्वरूपों, दशाओं एवं प्रक्रियाओं का वैज्ञानिक रूप में अध्ययन करना पड़ेगा। चूँकि भारत में मनोविज्ञान की जड़ें अध्यात्म अर्थात् आत्मा के अध्ययन और दर्शन से जुडी है अतः भारतीय विचारकों ने मन के अध्ययन में आध्यात्मिक अध्ययन पर बल दिया है। सामाजिक दृष्टिकोण से समझे तो यह मनोविज्ञान की वह शाखा

है जिसके अन्तर्गत किसी दूसरे व्यक्ति की वास्तविक, काल्पनिक अथवा प्रच्छन्न उपस्थिति हमारे विचार, संवेग अथवा व्यवहार को किस प्रकार प्रभावित करती है।" भारतीय मनोविज्ञान में अन्र्ददर्शन और निरीक्षण विधि का अस्तित्व पाया जाता है।"

आवश्यकता एवं उद्देश्य

भारत सहित विश्व भर के अनेक देशों में मनोरोगियों की लगातार बढ़ती संख्या चिंता का विषय है। 4 अक्टूबर 2016 को एन0डी0टी0वी0 राष्ट्रीय न्यूज चैनल पर 'भारत में बढ़ते मनोरोगी" शीर्षक से प्रसारित प्रसिद्ध कार्यक्रम प्राइम टाइम में रवीश कुमार ने मनोरोगों का मुद्दा उठाया जिसमें बातचीत के लिए निमहैंष, बंग्लुरू के वरिष्ठ मनोचिकित्सक डा0 निमेष देसाई एवं द बनियन" के निदेशक डॉ0 के०बी0 किशोर उपस्थित थें। इस कार्यक्रम में पेश किये गये आंकड़े और रिपोर्ट चौकाने वाले हैं। रिपोर्ट में बताया गया कि दुनिया के एक तिहाई मनोरोगी भारत में रहते हैं। पूरी दुनिया में 45 करोड़ मनोरोगी हैं जिनमें का 47 फीसदी हिस्सा चीन में तथा 45 फीसदी हिस्सा भारत में रहता है। यानि भारत में कुल 6 करोड़ 75 लाख मनोरोगी हैं। राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग के मुताबिक भारत में लगभग 7 करोड़ लोग मानसिक रोगों से ग्रसित हैं।' कार्यक्रम में मेडिकल साइंस की प्रतिष्ठित पत्रिका लांसेट एण्ड द लांसेट साइक्याट्री में छपे एक लेख के हवाले से बताया गया कि अगले 10 सालों में चीन के मुकाबले भारत में मनोरोगियों की संख्या में तेजी से इजाफा होने वाला है। इंडियन एक्सप्रेस में छपी एक खबर के मुताबिक भारत में 3800 मनोचिकित्सक हैं। 998 क्लीनिकल साइकोलोजिस्ट हैं। मतलब 40 लाख लोगों में 3 मनोचिकित्सक हैं। जबकि चीन में 40 लाख पर 47 मनोचिकित्सक हैं। आंकड़ों के मुताबिक भारत में 443 सरकारी मेंटल हास्पिटल हैं जबकि छह राज्य ऐसे हैं जहाँ एक भी मेंटल हास्पिटल नहीं है। केन्द्र सरकार द्वारा लोकसभा में पेश की गई एक रिपोर्ट के मुताबिक 2015 तक ॥ से 2 करोड़ भारतीय गम्भीर मानसिक विकारों सिजोफ्रेनिया, बाईपोलर मूड डिस्आर्डर के शिकार हैं और करीब 5 करोड़ आबादी अवसाद और चिंता जैसे सामान्य मानसिक विकारों से ग्रस्त है। जिन्हें देर-सवेर ऐसा लगता है कि डा0 के पास जाना है, वे लोग भी औरों से यह बात छिपाते हैं कि उन्हें ऐसा कोई रोग है। डा0 देसाई कहते हैं कि "आमतौर पर लोग मनोरोग को पागलपन समझ लेते हैं और इसी वजह से इसे छिपाते हैं। यहाँ तक कि जब लोग डाक्टर के यहाँ जाते हैं तो गाड़ी भी डाक्टर की क्लीनिक के सामने नहीं खड़ी करते कि बदनामी न हो। समाज में अधिकांश लोग ऐसे रोगों को भूत-प्रेत, चुडैल-चाटा आदि बुरी शक्तियों के प्रकोप का परिणाम मानते हैं। आमधारणा ये भी होती है कि ये रोग दूसरों के द्वारा गोपनीय तरीकों से किये या कराये गये जादू-टोनों का परिणाम हैं। आमजन में रोगों के प्रति अंधविश्वास इस कदर व्याप्त है कि वे ऐसे रोगों की चपेट में आकर अपने
ही बच्चों की बलि या परिजनों की हत्या करने से भी नहीं चूकते। ऐसी दिल दहला देने वाली खबरें हमें आये दिन टी0वी0, समाचार पत्रों आदि के माध्यम से देखने को मिलती हैं। तनाव और अवसाद जैसे रोग पूरे परिवार को नर्क में ढ़केल देते हैं। महत्वाकांक्षा या औरों की भाँति स्वयं को सुविधा सम्पन्न बनाने की लालसा और इनकी पूर्ति न हो पाने पर चिंता और निराशा से घिर जाना आज मानव समाज में आम बात हो चली है। विभिन्न शोध अध्ययनों में पता चला है कि बेरोजगारी, गरीबी, आवासहीनता, वृद्धावस्था, अंर्तपीढ़ी संघर्ष, प्रेम में असफलता, एकाकीपन आदि कारक मानसिक बीमारियों के लिए प्रमुख रूप से जिम्मेदार होते हैं। सत्रहवीं शताब्दी-प्रबुद्ध वर्ग, अट्ठारहवीं--विवेक युग, उन्नीसवीं प्रगति युग तथा बीसवीं को चिंता युग कहा गया है। समाज के विघटित और पिछड़े होने का बहुत बड़ा कारण मनोरोग भी है। संक्षेप में कहें तो मनोरोगों से आमजन पीडित भी है लेकिन इनके सही कारणों और उपचार की पद्धतियों के संदर्भ में अनजान भी है। अत: विषय का चयन करने के दौरान यह आवश्यकता महसूस हुई कि लोगों की रोजमर्रा एवं दैनिक जीवन की दिनचर्या में गहराई से शामिल इस पीड़ा और टीस के संदर्भ में सभी पहलुओं पर प्रकाश डाला जाए। दूसरी बात यह भी आवश्यक है कि जहाँ लोग पागलों को ही मनोरोगी समझते हैं वहाँ गम्भीर और सामान्य मनोरोगों के बारे में भी जनसामान्य को सुस्पष्ट जानकारियों से इस शोध कार्य के माध्यम से अवगत कराया
जाए।